सत्संग परम संत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(दिनांक 21 फरवरी 2016, फरीदाबाद, सै0–10)

!!राधा–स्वामी!!

अगर एक भी मनुष्य नही रहता इस संसार में, फिर कहाँ है भगवान? कल्पना करो कि इस संसार में कोई नही है, फिर भगवान किधर है? जब हम हैं तभी तो भगवान है, और जब हम है तो हम ही भगवान हैं। भगवान और कोई नही है, तुम सब भगवान हो।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरें

जब हम ही हैं, दूसरा कोई नही है, तो फिर हमको कौन दर्शन देगा? हमको अपने आप के दर्शन करने हैं। तो जब हम खुद ही वही हैं, तो हम किसको खोज रहें हैं? कौन दर्शन देगा हमको? मैंने कहा ना तुम एक सैकेंड के लिए कल्पना करो कि इस संसार में एक भी मनुष्य नही है, सब खत्म हो गया। फिर भगवान किधर है? हमने ही भगवान बनाया उसको, जब हम हैं तो वो है। इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब हम ही तो हैं।

Self Realization is God Realization

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली ढूँढन में गई, मैं ही हो गई लाल।।

जब मैं उस लाली को ढूँढने गई, जब समय आ गया तो मैं ही लाल हो गई। जिसको मैं खोज रहा था, वो तो मैं ही हूँ। लेकिन हमारी बदकिस्मती क्या है? हम अपने आपको लाचार समझते हैं, गरीब समझते हैं, बेकार समझते हैं। हम तो गरीब हैं, लाचार हैं, हमें कोई सहारा दे दो, गुरू जी हमको सहारा दे दो, हम पर दया करो, यही करते रहते हैं ना। लेकिन हम खुद अपने आप पर दया कर सकते हैं। हम अपने आपको भूल गए हैं कि हम कौन हैं?

एक शेर का बच्चा भेडों के झुण्ड में भटक गया और वो भी घास खाने लग गया। वो भी मैं–मैं करने लग गया। एक दिन शेरनी ने उसको देख लिया और पकड़ कर उसको पानी के पास ले गई, तू शेर का बच्चा है, देख तेरी शक्ल और मेरी शक्ल एक जैसी है। जैसे मैं दहाड़ती हूँ वैसे तू भी दहाड़। शेरनी दहाडी और उसके पीछे वह भी दहाडा, तो सारी भेडें भाग गईं। क्यों भाग गईं? कुछ तो है मुझमें, भेड़ क्यों भाग गईं? तो उसको समझ आई मैं भेड का बच्चा नही हूँ, मैं शेर का बच्चा हूँ। तो पहचान कराई किसने? उसकी माँ ने। तो हमारी माँ कौन है? हमारी माँ है सतगुरू। सतगुरू ही पहचान कराता है कि तुम कौन हो? तुम भेड के बच्चे नही हो, तुम शेर के बच्चे हो। फिर किसको ढूँढें हम?

Self Realization is God Realization

जब हम अपने आपको खोजने लगते हैं, कैसे खोजते हैं अपने आपको? हमें अपने अंदर जाना होगा। अंदर जाकर खोजते हैं अपने आपको। मैने अभी आपको अभ्यास करने का तरीका बताया था, ठीक इसी तरह हमें अपने अंदर जाना है। अंदर जाकर ही हम अपने आपको खोज सकते हैं। बाहर जाकर हम मालिक को नही खोज सकते। क्योंकि मालिक हमारे अंदर छुपा हुआ है। उसको अंदर ही खोजना है और जब हम खोज करना शुरू करेंगे, वो मिल जाएगा। हमको यहाँ से बम्बई जाना है, अगर मैं घर बैठे बम्बई–2 करता रहूँ, क्या बम्बई पहुँच जाऊँगा? घर से एक कदम बाहर निकालूँगा, तभी बम्बई पहुँचूंगा। In the longest Journey, Start with first step. सफर चाहे कितना भी लम्बा हो, पहला कदम तो लेनी ही पडेगा।

कबीर साहब कहते हैं–

जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।

मैं अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

जो किनारे पर बैठ गया, उसे क्या मिलेगा? उसे कुछ नही मिलेगा। जिसने डुबकी मारी उसको मिल जाएगा। जब हम अंदर डुबकी मारते हैं, तो हमको मिल जाता है। खोजी बनो! हमेशा अपने मन में ये सवाल रखो, मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं क्यों आयाहूँ? मुझे जाना कहाँ हैं? हमेशा खोजी बनते रहो, और एक दिन किनारा मिल ही जाएगा। किनारा है, लेकिन दूर है। उसको खोज नही रहे हैं हम। किनारे को ढूँढों, किनारा मिल जाएगा। खोजी बनो, जिसको तुम खोज रहे हो वो तुम्हारे अंदर ही बैठा है। तो फिर तुम कौन हो? तुम वही हो। बेकार में इधर–उधर ढूँढते हो, कभी मंदिर में, कभी मस्जिद में ढूँढने जाते हो। इसको बोलते हैं गुमराह होना।

कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनंत।

आन उपासक कृतघ्न, तरे ना नाम रटंत।।

कामी भी तर जाते हैं, क्रोधी भी तर जाते हैं, पापी भी तर जाते हैं। सब तर जाते हैं। वाल्मीकि डाकू था, वो भी तर गया। लेकिन दो तरह के लोग नही तरते हैं, एक आन उपासक और दूसरा कृतघ्न। आन उपासक उसको बोलते हैं जो अपने को और मालिक को अलग समझता है, दो समझता है। उसको बोलते हैं आन उपासक। वो भटक जाता है और मालिक को ढूँढने बद्रीनाथ, केदारनाथ जाता है, कभी मंदिर जाता है। दो हो गए ना, एक मैं और दूसरा मालिक। और फिर मालिक को ढूँढने के लिए जगह–2 भटकता है। उसको बोलते हैं आन उपासक, वो कभी तरता नही है। क्यों नही तरता वो? क्योंकि वो भगवान को गलत जगह ढूँढ रहा है। उसको भगवान को अपने अंदर ढूँढना है और वो भगवान को केदारनाथ, बद्रीनाथ जाकर ढूँढता है। उसने भगवान को गलत जगह ढूँढना शुरू किया तो भगवान उसको कहाँ मिलेगा?

रबिया एक मुस्लिम संत थी। तो एक दिन उसका चेला आया और पूछने लगा कि मैं मक्का या मदीना किस जगह जाऊँ? मुझे खुदा कहाँ मिलेगा? रबिया ने कहा– तुम कल शाम को आना, तो मैं बताऊँगी खुदा कहाँ रहता है। तो कल शाम को जब वो आया, तो बाहर सडक पर एक सरकारी लैम्प था। बाहर रोशनी थी तो रबिया बाहर रोशनी में जाकर इधर–उधर ढूँढने लगी। तो चेले ने पूछा रबिया तुम क्या कर रही हो? रबिया ने कहा मेरी सूँई खो गई है। तो चेले ने पूछा कहाँ खो गई है? रबिया ने कहा मेरे घर में सूँई खो गई है। चेला हंसने लगा, सूंई घर में खो गई है और तुम बाहर ढूँढ रही हो। रबिया कहने लगी अंदर घर में अंधेरा है, बाहर रोशनी है, इसलिए बाहर ढूँढ रही हूँ। तो चेला कहने लगा जो चीज अंदर घर में खोई है, वो बाहर कैसे मिल सकती है। तो रबिया ने कहा तुम भी तो ऐसा ही कर रहे हो। खुदा को ढूँढने मक्का मदीना जा रहे हो, जबकि खुदा तुम्हारे अंदर रहता है। ऐसे ही समझाया रबिया ने अपने चेले को। हमें मालिक को अपने अंदर ही ढूँढना है।

परमदयाल जी महाराज कहते थे आप सब मेरे गुरू हो। मैं भी यही कहता हूँ आप सब मेरे गुरू हो।

ज्ञान दीजिए ज्ञान दाता, ज्ञान के भंण्डार से।

सहज छुटकारा मिले, सबको कठिन संसार से।।

ये संसार कठिन है, ये संसार मौज मस्ती करने की जगह नही है। हम यहाँ मौज–मस्ती करने नही आए हैं। यहाँ हम अपने कर्मों का निपटारा करने आए हैं। हमारे कर्म ऐसे हैं कि हमको ये संसार कठिन लगता है। संसार कठिन नही है, मालिक ने हमारे लिए क्या–2 बना रखा है। हजारों तरह के फल हैं, हजारों किस्म के फूल और सब्जियाँ हैं। बहुत सुंदर–2 जगह हैं। तो संसार कठिन नही है, तुमने खुद संसार को कठिन बनाया है। हमने सारे जंगल काट दिए, अब ग्लोबल वार्मिंग हो

रही है। ये जो ग्लोबल वार्मिंग है खुद मनुष्य ने बनाई है, और अब रो रहे हैं। ये जो संसार है बहुत सुंदर जगह हे। इस संसार में मालिक ने मनुष्य के लिए हर सुविधा बनाई है। जो चीज हमारे लिए बहुत जरूरी है हवा और पानी एकदम मुफ्त है। इस संसार में सारे किस्म की जडीबूटियाँ हैं, जो हमारे शरीर को ठीक करती हैं। मालिक ने ये संसार बहुत सुंदर बनाया है, लेकिन हम फिर भी कहते हैं ये संसार कठिन है। क्यों कठिन है? कठिन हमने खुद बनाया है इसको। कैसे? अपने कर्मों से। हम ही ऐसे कर्म करते हैं, जिनसे हमको कष्ट मिलता है। इस शब्द में कहते हैं हे ज्ञान दाता हमको ज्ञान दीजिए। ताकि इस कठिन संसार से हमको मुक्ति मिल जाए। फिर गुरू ज्ञान देता है, गुरू आता ही ज्ञान देने के लिए है। ताकि हमारे सारे कष्ट दूर हो जाएँ। इस संसार के सारे कष्टों से हमारी मुक्ति हो जाए। गुरू के ज्ञान देने से हमारे कष्ट कैसे दूर हो जाएँगे? गुरू ज्ञान देकर हमारी सोच बदल देता है। जब गुरू ने हमारी सोच बदल दी, फिर हमारे सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। अब गुरू सोच कैसे बदलता है हमारी? सोच बदलता है ज्ञान से।

एक औरत है उसका 10 साल का बच्चा मर जाता है। वो रोने लगती है। घर में उसको देखकर सब रोने लगते हैं। रिश्तेदार आते हैं वो भी रोने लगते हैं। वो औरत सबको दुखी कर देती है, हे–भगवान आपको मेरा ही बच्चा मिल गया, संसार में इतने सारे बच्चे हैं। अब एक दूसरी औरत है। उसका भी 10 साल का बच्चा मर जाता है। लेकिन वो चुपचाप शांत, उसकी आँखों में एक भी आँशू नही। उससे पूछा क्या हो गया? उसने कहा कुछ भी नही हुआ। मालिक की अमानत थी, उसी ने दिया और उसी ने वापिस ले लिया। वो भी खुश और परिवार में सब खुश। उसका इतना ही लेन देन था, लेन देन खत्म हो गया, चला गया वापिस। अब इस औरत में और दूसरी औरत में क्या फर्क है? एक औरत ने रो–रो कर सारे घर, मोहल्ले, रिश्तेदारों को दुखी कर दिया। और दूसरी औरत ने खुद को और मोहल्ले वालों को, रिश्तेदारों को सुखी रखा। फर्क ये था, दूसरी जो औरत थी उसकी गुरू ने सोच बदल दी।

मेरा पोता था, मैंने 18 साल उसकी सेवा की। मैं उससे प्रेम करता था और वो भी मुझसे प्रेम करता था। लेन–देन खत्म हो गया और चला गया।

सहारनपुर में एक सेठ था। उसका इकलौता लडका था। वो बचपन से ही बीमार रहता था। उसका बहुत इलाज करवाया, लेकिन ठीक नही होता था। उसने बहुत पैसा बर्बाद किया उसके इलाज में। फिर किसी ने कहा एक हकीम है, अपने लडके को उसके पास ले जाओ। तो वो सेठ अपने लडके को उसके पास ले गया। हकीम ने लडके को दवाई दे दी। सेठ ने पूछा कितने रूपए हो गए? तो हकीम ने कहा 15 रू0 हो गए। जब सेठ ने हकीम को 15 रू0 दे दिए। तो वो लडका जोर–2 से हँसने लगा। तो सेठ ने पूछा बेटा क्या हो गया? तो उस लडके ने कहा पिताजी आज से मेरा और आपका लेन देन खत्म हो गया। उसी टाईम उस लडके ने प्राण छोड दिए। तो ये ज्ञान हमको कहाँ से मिलता है? ये ज्ञान हमको एक ही दुकान से मिलता है। कबीर साहब कहते हैं–

चल सतगुरू की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइए।

ज्ञान सिर्फ सतगुरू की दुकान पर ही मिलता है।

बुल्लेसाह का गुरू था, इनायतुल्ला खां। एक दिन इनायतुल्ला खां उसको बोलता है, सब मक्का मदीना जाते हैं, तू क्यों नही जाता? बुल्लेसाह बोला ठीक है मैं भी जाता हूँ। वो घर गया, घर से वक्सा लिया, कपडे पैक किए और बोला गुरू जी से इजाजत लेने जाता हूँ। अब उसका विस्तर सिर पर है और वक्सा हाथ में है। गुरू जी के पास गया और गुरू जी के 3 चक्कर काट दिए। चक्कर काट के गुरू जी के पैरों में गिर गया और बोला गुरू जी मेरा मक्का भी हो गया, मदीना भी हो गया और काबा भी हो गया।

गुरू गोविंद दोनो खडे, किसके लागूँ पाय।

बलिहारी गुरू आपकी, जिन गोविंद दियो लखाय।।

गुरू और गोविंद दो नही, एक ही हैं। कृष्ण अर्जुन का गुरू था। जब कृष्ण अर्जुन को ज्ञान दे रहा था, तो अर्जुन मान नही रहा था। मै नही अपने भाईयों को मारूँगा। तो फिर कृष्ण ने गोविंद का रूप दिखाया। अपना विराट मुँह खोलकर दिखाया, उसमें पूरी कौरव सेना मरी पडी है। कृष्ण अर्जुन से कहता है इन सबको मरना है और तेरे ही हाथों से मरना है। तो पहले कृष्ण गुरू था, फिर गोविंद बन गया। तो गुरू और गोविंद दोनो एक ही हैं। वही गुरू है वही गोविंद है।

गुरू को पहचानना मुश्किल है। गुरू क्या चीज है कोई पहचान नही सकता। जिसको थोडा–2 समझ में आता है वो ही तर जाता है। लेकिन गुरू को समझना बहुत कठिन काम है। सब गुरू को चमत्कारी बाबा समझते हैं। सब समझते हैं कि गुरू हमारी दुकान चलाने आया है। गुरू हमको नौकरी दिलाने आया हे। ये समझते हैं हम गुरू को। लेकिन जिसको गुरू की पहचान हुई, वो तर गया।

लाखों मध्य मत गिनो, कोटिन में कोऊ एक।

लाखों में नही करोडों में कोई एक है, जो गुरू को समझता है। जो गुरू को समझता है, वो तर जाता है।

राधा स्वामी।